Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

राजा राम मोहन राय आधुनिक युग के पुरोधा

हरीश*

* एम ए, नेट -जेआरफ (इतिहास) कोडुका पोस्ट रिछोली, ब्लॉक पाटोदी बालोतरा (राज.) भारत

प्रस्तावना – प्राचीनकाल से भारत में अनेक आक्रमणकारी आये इनमें यूनानी शक, हूण, कुषाण, अरबी, तुर्क, मंगोल, मुगल,अंग्रेज इत्यादि प्रमुख है।भारत पर आक्रमण करने का अधिकांश का मुख्य उद्देश्य यहां की धन सम्पदा को प्राप्त करना था। कुछ यहां से पुन अपने मूल स्थान को लौट गए और कुछ यही बस गए और उन्होंने भारतीय सभ्यता संस्कृति को अपना लिया इस प्रकार भारतीय संस्कृति और विदेशी संस्कृति में समन्वय स्थापित हुआ। भारत में अंग्रेज व्यापार करने के लिए आये थे और धीरे उन्होंने भारत पर कब्जा कर लिया। अंग्रेज मानते थे की पूरी दुनिया में उनकी संस्कृति सर्वश्रेस्ठ है और उनका उद्देश्य है भारत के लोगों भी सभ्य बनाना है। उनीसवीं सदी का भारतीय समाज अनेक परम्परागत रूढ़ियों से ग्रसित था इस समय भारतीय समाज में अनेक कुप्रथाओ नई कब्जा जमा रखा था। इनमें जाति प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, छुआछूत, उच्च नीच, धार्मिक आडम्बर, कर्मकांड इत्यादि प्रमुख है।

इस सदी भारत में मध्यम वर्गो के अनेक लोग पश्चिम से शिक्षा प्राप्त करने यूरोप गए थे इनमें राजा राममोहन राय एक प्रमुख व्यक्ति थे। राममोहन राय को अनेक भाषाओ का ज्ञान था उन्होंने बचपन में संस्कृत सीखी और अल्पायु में तिब्बत का यात्रा की थी। इन्होने अरबी, फारसी की शिक्षा पटना से प्राप्त की थी। राजा राम को धर्म सुधार से विशेष प्रेम था उन्होंने सभी धर्मो का अध्ययन किया था। इन्होंन सभी धर्मो को तर्क की कसौटी से देखना शुरू किया। इन्होने सभी धर्मो तथा ईश्वर के लिए एक मत का प्रतिपादन किया इसके लिए इन्होने 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की। उन्होंने तत्कालीन हिन्दू धर्म में व्याप्त रूढ़ियों, कर्मकांडो, बहुदेववाद का विरोध किया।इनका मानना था की ईश्वर एक है और उसे प्राप्त करने के लिए हमें किसी कर्मकाण्ड की आवश्यकता नहीं है। इनके धार्मिक विश्वास उपनिषदों पर आधारित थे।

मुनरो विलियम नई लिखा की राममोहन राय ने तो धार्मिक नेता थे और ना ही वेदांती धर्म के प्रति उनका झुकाव न तो अलौकिकता के प्रति उनका आकर्षण और ना ही शैक्षिणक कारणों से था। मात्र सामाजिक हित ही उनका उद्देश्य था जिसने उन्हें प्रेरित किया कि वे धर्म में कुछ सुझावों को प्रतिपादित करे।

राजाराम मोहन का मानना था कि धर्म गुरु अपनी बातो को सिद्ध करने के लिए धर्म में अकारण जटिलता और संशय पैदा करते है। जिस अवधारणा ने उनके मन को सर्वाधिक प्रभावित किया वह था स्वतंत्र सोच और तर्क के विरुद्ध धर्म कि भूमिका। राममोहन राय जानते थे कि क्यों ब्रुनो को जिन्दा जलाया गया, गेलोलियो को जेल भेजा गया और मंसूर को मृत्यु दंड दिया गया। उन्होंने स्पष्ट रूप से उद्धघोषित किया कि तर्क और एकमात्र तर्क ही धर्म के अन्वेषण में मार्ग दर्शक है।

राज राम ने केवल धार्मिक क्षेत्र में सुधार पर बल दिया बल्कि तत्कालीन हिन्दू समाज में व्याप्त रूढ़ियों कि भी जमकर आलोचना की। भारत का सामाजिक संगठन का स्वरूप कमजोर था इसके अन्तर्गत कई बुराइयाँ विद्यमान थी।समाज सुधार के क्षेत्र में सबसे बड़ा कार्य इनका सती प्रथा को प्रतिबंधित करवाना था। इनके भाई की मौत के बाद जब इनकी भाभी को जबरदस्ती सती होने पर विवश किया गया तब से इन्होने सती प्रथा के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया। ब्रिटिश सरकार ने 4 दिसंबर 1829 को बंगाल प्रेसीडेंसी में सती को गैर कानूनी घोषित कर दिया। कानून में कहा गया था कि जो लोग किसी विधवा को उसकी इच्छा के विरुद्ध सती होने के लिए विवश करेगा उसके विरुद्ध कार्यवाही कि जाएगी। इसके बाद कुछ रूढ़िवादी हिंदुओ ने इस कानून कर प्रति आपत्ति जताई इनमें राधाकांत देव और काली कृष्ण बहादुर प्रमुख थे इन्होने सम्राट कि कौंसिल में तक अपील कि किन्तु सफलता नहीं मिली।

बंगाल में सामाजिक सुधारको की जो लहरों की जो लहर उत्पन की उसके परिणामस्वरूप कुछ समय बाद कुछ वर्षो में कन्या वध बंद हुआ, विधवाओं के पुनर्विवाह का रास्ता खुला, दास प्रथा बंद हुई स्त्री शिक्षा की दिशा में कदम उठाए गए। राममोहन ने स्त्री अधिकारों का भी समर्थन किया था।

राजराम मोहन राय पश्चिम के स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व जैसे मूल्यों से प्रभावित थे। वह इन मूल्यों को भारत में भी लागु करना चाहते थे। वह ब्रिटिश भारत में स्वराज की स्थापना करना चाहते थे। ये ब्रिटिश शासन के समर्थक थे। उन्होंने प्रेस की आजाद के लिए आवाज उठाई और अभिव्यक्ति की आजादी के लिए संघर्ष किया। उन्होंने कार्यपालिका को न्यायपालिक से अलग करने पर बल दिया और अधिक से अधिक संख्या में भारतीयों को प्रशासन में साम्मिल करने पर बल दिया।

राजा राम मोहन आधुनिक शिक्षा के समर्थक थे इन्होने शिक्षा के विकास के लिए डेविड हेयर के साथ मिलकर हिन्दू कॉलेज की स्थापना की। तथा 1825 में वेदांत कॉलेज स्थापना की जहाँ भारतीय शिक्षण और पश्चिमी सामाजिक भौतिक विज्ञान को पढ़ाया जाता था।

इस प्रकार 19 वी शताब्दी में राजा राम मोहन राय पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने तत्कालीन भारत की सभी समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया।उन्होंने

भारतीय समाज की समाज के रूढ़ियों का विरोध किया।

उन्होंने भारतीयों का शोषण करने वाली सभी ब्रिटिश नीतियो की भी खुलकर आलोचना की थी। ऍफ मेक्समूलर लिखते है की राममोहन राय के सभी कार्यो में साहस और खरापन देखने को मिलता है उनके कुछ मित्रो को उनके बारे में गलतफहमी हो गई थी और वह उन्हें मुसलमान अथवा ईसाई कहने लगे। यूरोप के लिए रवाना होने से पहले उन्होन कहा था कि उनकी मौत पर हरेक धर्म सम्प्रदाय चाहे वह ईसाई हो, हिन्दू हो या मुसलमान उन्हें अपना मानने का दावा करेंगे, किन्तु वास्तव में उनका वास्ता किसी से नहीं था। उनकी धार्मिक भावनाएं एक इस्तिहार में लिखी मिलती है इस कृति में ईश्वर के एक होने अनंत शक्ति सम्पन होने, परम् कल्याणकारक होने और आत्मा कि अमरता के बारे में विश्वास प्रकट किया है।

इसी संदर्भ में डॉक्टर मेक्विनकाल के अनुसार वह एक नवीन युग के अग्रदूत थे उनकी जलाई हुई ज्वाला आज तक जल रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. यादव शिवाशा, राजा राम मोहन राय, ऋषभ बुक्स 2011, नई दिल्ली।
2. मेक्समूलर ऍफ, राममोहन राय से परमहंस तक विद्या विहार 2013, नई दिल्ली।
3. ग्रोवर, यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास नवीन मूल्यांकन, एस चंद एण्ड कम्पनी 2000,नई दिल्ली।
4. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, सुचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार 1997
5. चंद्र विपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वान 2008, नई दिल्ली।

****